दृश्य–श्रृव्य साधन–आवश्यकता, प्रयोग तथा सावधानियाँ

संरक्षक एवं मार्गनिर्देशक

श्री एन0एस0 रवि

आई0ए0एस0

महानिदेशक

सम्पादक

बी0 डी0 चौधरी

उपनिदेशक

उप सम्पादक

डॉ0 नवीन कुमार सिन्हा

दीनदयाल उपाध्यायराज्य ग्राम्य विकास संस्थान, बख्शी का तालाब, लखनऊ–226202

ग्राम सर्ड
Gram SIRD

दूरभाष Phone 05212-298292
फैक्स Fax 05212-298291
ई.पी.बी.एक्स. EPBX 05212-298209
Website sirdup.in
E-mail sirdup@sirdup.in

दी.द.उ. राज्य ग्राम्य विकास संस्थान

बख्शी-का-तालाब, इन्दौरा बाग, लखनऊ-226202

D.D.U. State Institute of Rural Development

Bakshi-Ka-Talab, Indaurabagh, Lucknow-226202

पत्रांक Ref. No. .....

दिनांक Date : .....

दो शब्द

संस्थान तथा उसके अधीनस्थ 17 क्षेत्रीय एवं 33 जिला ग्राम्य विकास संस्थानों द्वारा निरन्तर विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किए जाते हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रमों के प्रभावीपन में वृद्धि करने के उद्देश्य से दृश्य–श्रव्य साधनों का प्रयोग किया जाता है। दृश्य–श्रव्य साधनों के प्रयोग से प्रशिक्षक प्रभावी संचार करने में सक्षम हो जाता है। प्रशिक्षकों तथा दृश्य श्रव्य साधनों का प्रयोग करने वाले अन्य कर्मियों हेतु "**दृश्य–श्रृव्य साधन–आवश्यकता, प्रयोग तथा सावधानियॉ**" विषयक पुस्तिका का प्रकाशन किया गया है। पुस्तिका में विभिन्न दृश्य–श्रृव्य साधनों का सचित्र वर्णन किया गया है। इस पुस्तिका के लेखन हेतु मैं डॉ0 नवीन कुमार सिन्हा, प्रचार सहायक का आभारी हूँ जिन्होंने अत्यन्त कम समय में इसे आप तक पहुंचाने में सहयोग प्रदान किया।

आशा है उक्त पुस्तिका संस्थान तथा उसके अधीनस्थ संस्थानों में प्रभावी प्रशिक्षण संचालन में उपयोगी सिद्ध होगी।

दिनांकः 28 अगस्त, 2013

(बी0डी0 चौधरी)
उपनिदेशक

दृश्य श्रृव्य साधनों का प्रयोग

उद्देश्य

दृश्य श्रृव्य साधन (Audio Vidual Aids) का उद्देश्य प्रशिक्षण प्रकिया के प्रभावीपन में वृद्धि करना है। दृश्य श्रृव्य साधनों के साथ–साथ चाकबोर्ड जैसे सामान्य साधनों के स्थान पर वीडियो, कैसेट प्लेयर प्रोजेक्टर आदि ने स्थान ग्रहण कर लिया है।

साधनों का चुनाव–

दृश्य श्रृव्य साधनों का चुनाव करने से पूर्व निम्नलिखित कारकों पर ध्यान देने की आवश्यकता है:

- जिनके लिए प्रस्तुतिकरण तैयार किया जा रहा है, उनकी संख्या।
- प्रस्तुतिकरण कहॉ के लिए तैयार किया गया है जैसे– क्लासरूम या प्रक्षागृह आदि।
- डिस्प्ले का साइज क्या हो ?
- साधनों पर लागत क्या होगी ?
- जिनके लिए साधनों का प्रयोग होगा उसका उद्देश्य क्या है ?

प्रसार शिक्षण सहायक साधनों का वर्गीकरण

- प्रक्षेपक साधन — Projected
- अप्रेक्षपक साधप — Non Projected
- श्रृव्य — Audio
- दृश्य — Visual
- दृश्य–श्रृव्य — Audio Vidual
- मशीनी — Mechanical
- गैर–मशीनी — Non Mechanical

प्रक्षेपक साधन–

- सिनेमा प्रोजक्टर
- स्लाइड प्रोजेक्टर
- ओवर हेड प्रोजक्टर
- ओपेक प्रोजेक्टर

अप्रक्षेपक साधन–

- फ्लैश कार्डस
- फ्लैनल ग्राफ
- चार्ट, ग्राफ व मैप
- चाक बोर्ड
- व्हाइट बोर्ड
- तस्वीरें

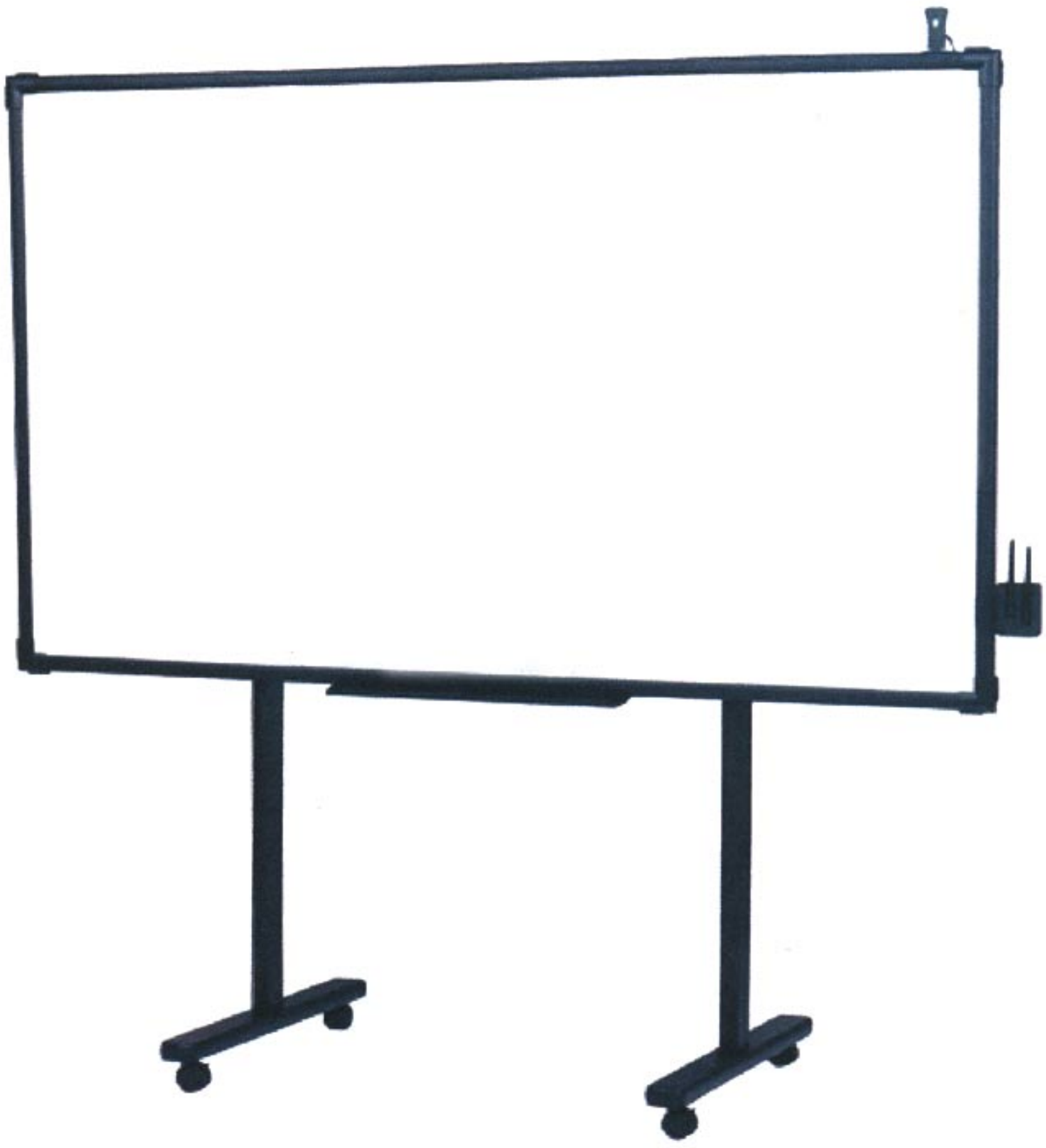

श्रृव्य साधन–

- टेपरिकार्डर
- रेडियो
- रिकार्डिंग

दृश्य–

- फलैश कार्डस्
- फलैनल ग्राफ
- चाक बोर्ड
- तस्वीरें,

दृश्य श्रृव्य–

- टेलीविजन
- ड्रामा
- कठपुतली शो
- सिनेमा प्रोजेक्टर
- कम्प्यूटर
- एल0सी0डी0 प्रोजेक्टर

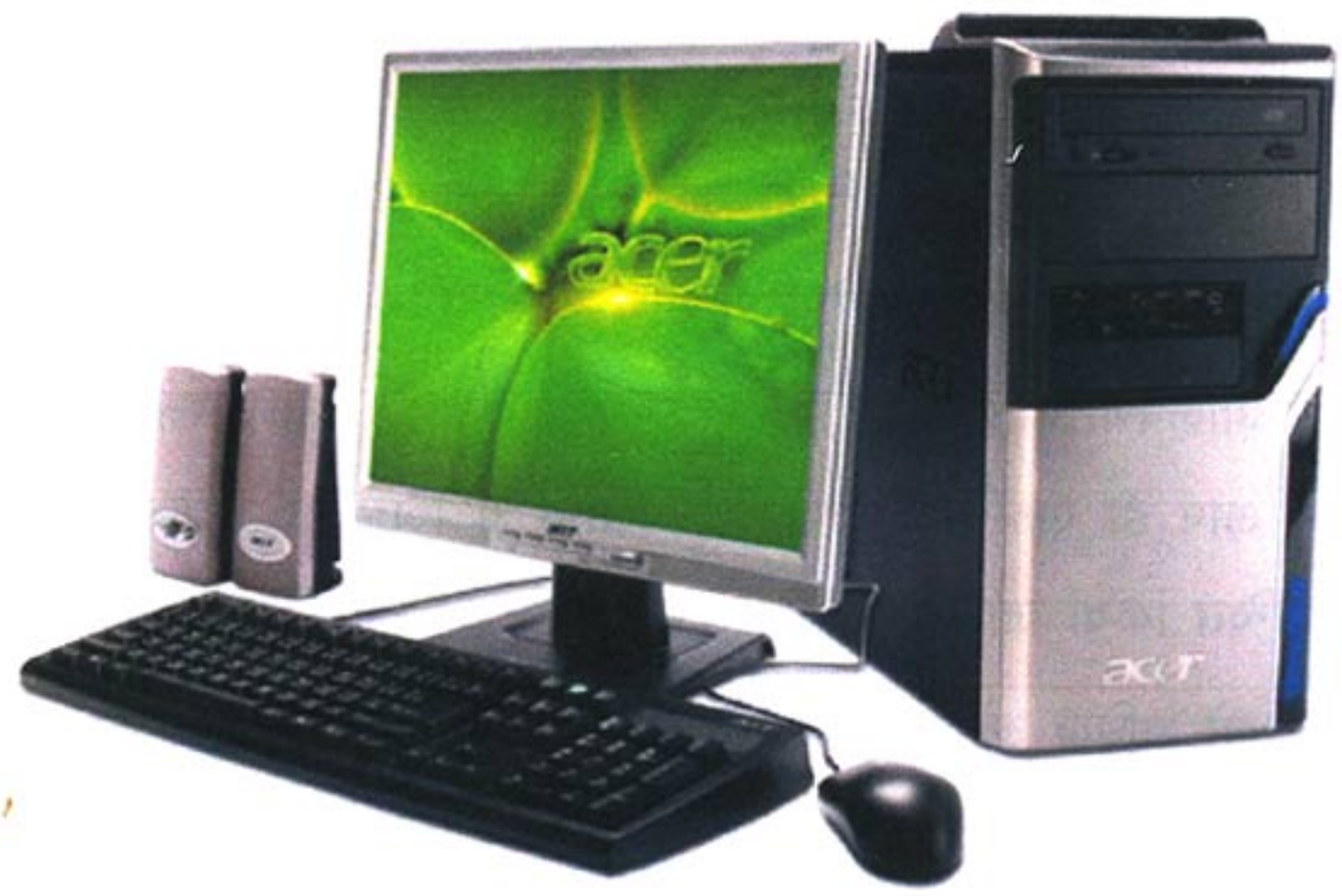

दृश्य श्रृव्य साधन

- चित्र स्वयं ही एक भाषा है। एक चित्र एक हजार शब्दो के बराबर होता है। अधिकतर लोगो में इसी साधन द्वारा उनके लिए उपयोगी विषयों के ज्ञान प्रदान किया जाता है।

- दृश्य श्रृव्य साधनों से विषय सरल हो जाता है। मनुष्य उसी चीज को सीख और याद कर सकता है जिसको वह अच्छी तरह से समझ ले। इन साधनों द्वारा क्यों, क्या और कैसे का उत्तर आसानी से मिल जाता है।
- इससे अधिक लोगों को एक साथ शिक्षा प्रदान की जा सकती है। रेडियो, सिनेमा, टेलीविजन, प्रदर्शनी आदि द्वारा लाखों लोगों के पास कोई संदेश एक साथ पहुंचा सकते हैं।
- इससे कार्यक्रम में आकर्षण पैदा होता है। श्रृव्य–दृश्य साधन इतने रूचिकर होते है कि सैकड़ों लोग अपने आप ही एकत्रित हो जाते हैं, लोगों में जिज्ञासा बढ़ाकर अपने काम को सरलतापूर्वक कार्यान्वित किया जा सकता है।
- कम व्यय में अधिक से अधिक लोग लाभान्वित होते हैं। प्रारम्भ में तो इन साधनों को प्रस्तुत करनें में अधिक व्यय होता है परन्तु व्यय को इतने लाभ उठाने वालो लोगों में बॉट दिया जाये तो सम्भवतः इससे सस्ता कोई अन्य साधन नहीं होगा।
- स्थानीय समस्याओं का चित्र तथा उसका उन्नतिशील वार्ता से मेल इसी साधन द्वारा सम्भव है। समान स्थितियों एवं परिस्थितियों में दूसरे स्थानों पर क्या उन्नति हुई, यह इसी संसाधन द्वारा ज्ञाता हो सकता है।
- यह साधन प्रशिक्षित व्यक्तियों की कमीं को पूरा करता है।

दृश्य श्रृव्य साधनों का शिक्षण में प्रयोग से लाभ

चार्स पी0 होबन, जेम्स डी0 फिन एवं एडगर डेल ने 1954 में यह पाया कि दृश्य श्रृव्य साधनों के शिक्षण में प्रयोग से निम्नलिखित सात लाभ होते है:–

- **संबोधित सोचने (Conceptual Thinking) प्रकिया के लिए दृश्य श्रृव्य साधन एक ठोस आधार का काम करते हैं। इस प्रकार व्यर्थ शब्द जाल से शिक्षार्थियों को मुक्त करते हैं।**
- शिक्षार्थियों में यथार्थ अनुभव की संरचना करके उनके अन्दर स्वयं कियाकलाप की प्रेरणा उत्पन्न करते हैं।
- विचारों की अविच्छिन्नता बनाये रखते हैं। सिनेमा में विशेष रूप से यह बात लागू होती है।
- अर्थ को अधिक स्पष्ट करने में मदद करके शब्द जाल को बढ़ावा देते हैं।

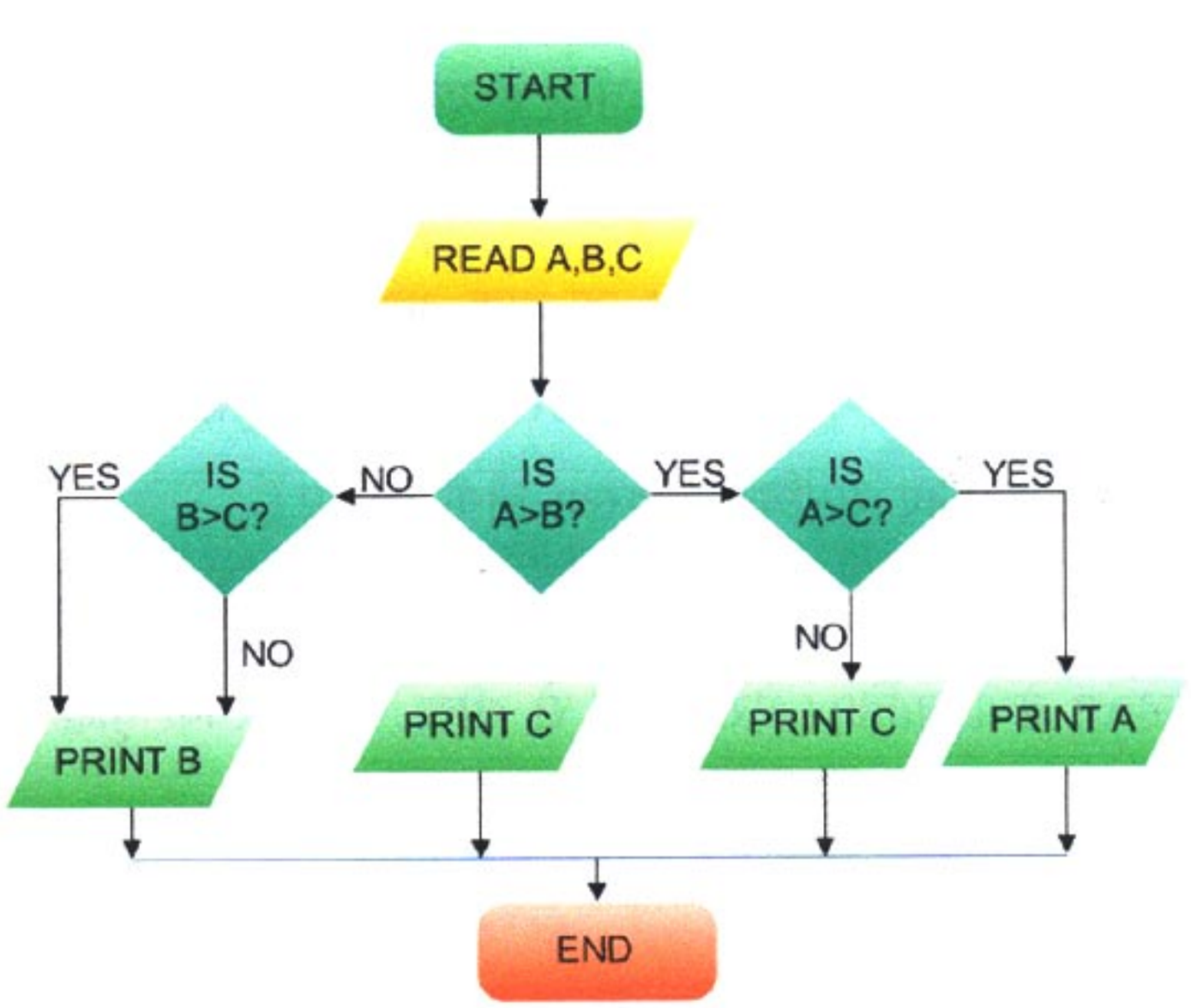

- ऐसे अनुभव प्रदान करते हैं जिन्हें अन्य वस्तुओं से प्राप्त नहीं किया जा सकता । सीख की प्रकीया में अधिक कुशलता, गहराई तथा विविधता उत्पन्न करते हैं।

दृश्य श्रव्य साधनों के चुनाव तथा निर्माण हेतु कतिपय निर्देशन

एड़बा एकन (1954) ने इस विशय में निम्न निर्देशनों का सुझाव दिया है:–

- **शिक्षार्थियों का विवेचन–** शिक्षार्थियों की पृष्ठभूमि, शिक्षा तथा ज्ञान का स्तर पढ़ाने में किस दृश्य श्रृव्य साधन का प्रयोग किया जाये। फ्लैनल ग्राफ कक्षा में पढ़ाने के लिए उपयुक्त हो सकता है किन्तु निरक्षर एवं अशिक्षित ग्रामीणों को पढ़ाने के लिए अनुपयुक्त होगा।
- **आसानी से देखन योग्य–** साधन ऐसा होना चाहिए कि प्रत्येक शिक्षार्थी उसे असानी से बिना अपनी ऑखे तथा मस्तिष्क पर जोर डाले, देख सके। अक्षर एवं आकृतियों को बड़ा होना चाहिए तथा पर्याप्त रोशनी, हवा एवं बैठने के स्थान की व्यवस्था होनी चाहिए।
- **समझने में आसान–** दृश्य श्रृव्य साधनों के चुनाव एवं निर्माण में शिक्षार्थियों की शिक्षा का स्तर एवं उनकी योग्यता का ध्यान रखना आवष्यक है। भाषा एवं तकनीक, शब्दों का इस प्रकार सरलीकरण होना चाहिए जिससे सभी लोग आसानी से समझ सकें।
- **सादा एवं सीधा–** अनेक इस साधन प्रकार बनाये जाते हैं जिससे वे दुरूह एवं अनेक तथ्यों को समायोजित करने के कारण जटिल हो जाते हैं। सादापन एवं सीधापन ऐसे गुण हैं जो किसी भी साधन के लिए अत्यन्त वांछनीय है एवं सीधे तरीके से प्रस्तुत करना चाहिए।
- **चालन एवं वाहन में आसानी–** यदि शिक्षण साधन को कहीं ले जाना हो तो उसे ऐसा होना चाहिए कि उसे आसानी से लो जाया जा सके अन्यथा वाहन की समुचित एवं यथेष्ठ व्यवस्था होनी चाहिए। यदि गॉव में टी0वी0, वी0सी0आर0, डी0वी0डी0 या अन्य कोई उपकरण ले जाना हो तो उसके लिए समुचित व्यवस्था होनी चाहिए।
- **मूल बातों पर बल देना–** मूल तथ्यों को बड़े अक्षरो में लिखकर या उनके नीचे लाइन खींचकर महत्ता देनी चाहिए। ऐसे करने से सीख में गुणात्मक वृद्धि होती है।

विभिन्न प्रकार के साधनों की विषेशताएँ–

1. चाक बोर्ड–

प्रयोग–

- चाक बोर्ड सामान्यतः समस्त स्थानों पर उपलब्धता रहती है तथा इसका प्रयोग खर्चीला नही होता है।
- इसके प्रयोग के लिए किसी पूर्व तैयारी की आवश्यकता नहीं होती हैं।

कमजोरियां–

- चाक बोर्ड का प्रकार करते समय वार्ताकार समूह की तरफ न देखते हुए चाकबोर्ड की ओर ध्यान रहता है।
- सीमित दूरी से दिखाई पड़ता है।
- हाथ और कपड़ों में धूल व चाक के कण लग जाते हैं।
- विभिन्न **Effect** सम्भव नहीं है।

साधन के प्रयोग में ध्यान रखने वाली बातें–

- **Text** श्रोता के लिए लिखा गया है न कि वार्ताकार द्वारा स्वयं के लिए।
- **Text** का साइज कितना हो ?
- ऑखों के लेबल पर **Text** लिखा जाए।
- कार्य साफ–सुथरा किया जाए। अनावश्यक Text को हटा दिया जाए।
- कार्य समाप्त होने पर बोर्ड को साफ कर दिया जाए।
- प्रभावीपन के लिए रंगीन चाक का प्रयोग करें।
- गाढ़े रंगो का प्रयोग न किया जाए।

2. फिलिप चार्ट अथवा न्यूजप्रिण्ट पैड–

प्रयोग–

- इसका प्रयोग चाक बोर्ड की भॉति होता है अथवा पूर्व में तैयार शीट के रूप में किया जाता है।
- यह संकेत, शब्द , चित्र तथा रेखा चित्र के समिश्रण से बनता है।
- इसका प्रयोग किसी समस्या का विश्लेशणात्मक अध्ययन के लिए किया जाता है।
- दुरूह विचारों को संक्षिप्त रूप से लोगो तक पहुंचाता है।
- नवीन बातों की जानकारी एवं ज्ञान प्रदान किया जाता है।
- इस तरफा संवाद के लिए उपयुक्त है।
- समय एवं धन की बचत।
- त्वरित साधन के रूप में प्रभावी ।
- Recap के लिए प्रभावी साधन।
- आसानी से ले जाने योग्य।
- विभिन्न प्रकार के रंगों के प्रयोग के लिए उपयुक्त।
- **चार्ट के प्रकार–**
    - फ्लो चार्ट–संगठन के विभिन्न स्तर को दर्षाना।
    - स्ट्रिप चार्ट–जिस विषय पर बात हो रही है उसे छोड़कर शेष ढका रखते हैं।
    - टेबुल चार्ट– आंकड़ो को कमबद्ध प्रस्तुत करना।
    - प्रगति चार्ट– प्रगति, परिवर्तन, पैदावार दिखाना।
    - संस्थागत चार्ट– किसी संगठन की एक झलक।
    - तुलनात्मक चार्ट–चीजों की उन्नति, अवनति तथा मुकाबला।
    - निर्देशात्मक चार्ट– चिकित्सा, सफाई, शिक्षा क्यों/कैसे ?

कमजोरियां–

- पृष्ठ में सीमित स्थान।
- सीमित **effect**।
- अधिक समय तक सुरक्षित न रखा जा पाना।
- छोटे लक्षित समूह के लिए प्रयुक्त।

साधन के प्रयोग में ध्यान रखने वाली बातें –

- फ्लिप चार्ट के पहला चार्ट सादा होना चाहिए।
- सर्वप्रथम छोटे कागज पर योजना बनायें।
- शीर्षक सादा हो।
- सादे/बड़े अक्षर/स्पष्ट तथा आकर्षक हों।
- अक्षर उचित रंग के हों।
- पोस्टर में एक भावना, चार्ट में कई बातें एक साथ।
- सभी शीट को सुरक्षित रोल बना कर रखें।
- जब प्रस्तुतिकरण किया जा रहा हो, चार्ट के स्टैण्ड की एक तरफ खडे हों।
- विशेष प्रकार के पेपर से मार्क करें।
- एक अतिरिक्त पेन साथ में रखें।

3. पोस्टर –

प्रयोग तथा उद्देश्य –

- लोगो को नयी बातों की जानकारी प्रदान करना।
- किसी वस्तु विशेष की ओर ध्यान आकर्षित करना।

आकार – 42''X 3'' 26'' X 21''

साधन के प्रयोग में ध्यान रखने वाली बातें –

- शीर्षक सूक्ष्म एवं आकर्षक।
- व्यंग्य चित्रों का अधिकतर प्रयोग।
- एक पोस्टर में एक विचार।
- आकर्षण हेतु रंगों का प्रयोग।
- अक्षर बड़े एवं सादे।
- पोस्टर आउटडोर के लिए, चार्ट इनडोर के लिए लाभदायी।

4. व्हाइट बोर्ड –

प्रयोग–

- चाक बोर्ड की तुलना में साफ–सुथरा।
- लिखने में आसान, साफ।
- चमकीला, साफ तथा सुहावना।

कमजोरियां–

- यदि गलत पेन का प्रयोग हो जाए, तो उसे मिटाने में कठिनाई।
- प्रभावी प्रयोग के लिए लेखन तकनीक तथा निरन्तर अभ्यास की आवश्यकता।

साधन के प्रयोग में ध्यान रखने वाली बातें–

- सदैव स्वच्छ रखें।
- पढ़ने योग्य।
- बोर्ड के सामने सामग्री न ढकें।
- श्रोता से बात करें, बोर्ड से नहीं।
- विभिन्न रंग प्रयुक्त करें।
- Text श्रोता के लिए लिखा गया है न कि वार्ताकार द्वारा स्वयं के लिए।
- Text का साइज कितना हो ?
- आँखों के लेबल पर Text लिखा जाए।
- कार्य साफ–सुथरा किया जाए। अनावश्यक Text हो हटा दिया जाए।
- कार्य समाप्त होने पर बोर्ड को साफ कर दिया जाए।
- प्रभावीपन के लिए रंगीन चाक का प्रयोग करें।
- गाढे रंगो का प्रयोग न किया जाए।

5. ओवर हेड प्रोजक्टर–

प्रयोग / लाभ–

- वार्ताकार सदैव समूह के समक्ष ध्यान दिया जाना।
- विभिन्न रंगों का प्रयोग।
- साफ एवं त्वरित।
- अंधेरे कमरे की आवश्यकता नहीं।

कमजोरियां–

- विद्युत आपूर्ति की आवश्यकता।
- पंखे की आवाज से बाधा।

साधन के प्रयोग में ध्यान रखने वाली बातें–

- पेन में इंक आदि चेक कर लें।
- अतिरिक्त बल्ब साथ में रखें।
- स्लाइड को क्रमवार रखें।
- स्क्रीन को अपने शरीर से ढकें नहीं।
- स्लाइड व समूह की ओर देखें न कि स्क्रीन की ओर देखें।
- जब आवश्यकता न हो, ओ0एच0पी0 का स्विच बन्द कर दें।

6. चार्ट, डायाग्राम तथा फोटोग्राफ्स–

प्रयोग / लाभ–

- यदि व्यवसायिक रूप से सामग्री पूर्व में ही तैयार है तो वार्ताकार के समय व धन की बचत।
- शब्दों की तुलना में अधिक व्याख्या होना।

कमजोरियां–

- यदि अधिक जटिल है तो समझने में परेशानी।
- अधिक मात्रा वाले समूह के लिए बहुत अधिक छोटा साधनं
- तैयार करने में खर्चीला।

साधन के प्रयोग में ध्यान रखने वाली बातें–

- छोटे चार्ट तथा डायाग्राम अधिक सुविधाजनक।
- समूह में वितरित करने से समय, व्याख्या आदि करने में सूविधा।

- छोटे चार्ट तथा डायाग्राम अधिक सुविधाजनक।
- समूह में वितरित करने से समय, व्याख्या आदि करने में सूविधा।

7. मल्टीमीडिया प्रोजेक्टर कम्प्यूटर के साथ–

प्रयोग / लाभ–

- आसानी से प्रस्तुतिकरण।
- मूवी आसानी से प्रस्तुत किया जाना।
- शो के दौरान आसानी से परिवर्तन किया जाना सम्भव।

कमजोरियां–

- प्रारम्भ में खर्चीला परन्तु बाद में लागत कम।
- प्रस्तुतिकरण के लिए पर्याप्त ज्ञान की आवश्यकता।

साधन के प्रयोग में ध्यान रखने वाली बातें–

- सम्भव हो तो प्रोजेक्टर को एक स्थान पर रखा जाए और रिमोट कन्ट्रोल का प्रयोग किया जाए।

8. फ्लैनल ग्राफ–

प्रयोग / लाभ–

- पहले एक कहानी क्रमवार बनायी जाती है।
- कहानी के अनुसार मोटे कागज पर अलग–अलग चित्र बनाकर काट लिया जाता है।
- चित्रों के पीछे रेगमाल चिपका दें।
- लकड़ी के फ्रेम पर फ्लैनल कपड़ा लगा दें जिस पर चित्र चिपका दें।?

साधन के प्रयोग में ध्यान रखने वाली बातें–

- स्पष्ट दिखाई पड़े।
- धरातल पर पर्याप्त प्रकाश हो।
- बोर्ड पीछे झुका हो।
- सामग्री नीचे समुचित क्रम से लगायें।
- शिक्षा सामग्री समुचित क्रम से लगायें।
- शिक्षा सामग्री सादी हो।

9. फ्लैश कार्ड–

प्रयोग / लाभ–

- प्रयोग वांछित विषय वस्तु कथानक के रूप में प्रस्तुतिकरण।
- एक वार्ता में 10–12 फलैश कार्ड दिखाये जाते हैं।
- साइजः 9 X 12 (40–50 लोग) 22 X 28
- चित्र के पीछे विवरण लिखा जाता है।
- प्रत्येक सेट का प्रयोग एक टॉपिक पढ़ाने के लिए कहानी के रूप में किया जाता है।

10. कठपुतली–

प्रयोग / लाभ–

- प्रदर्शनकर्ता कहानी को एक अभिनय के रूप में प्रस्तुत करता है।
- मनोरंजन हेतु गीतों व कविताओं का सहारा।

प्रकार–

- स्ट्रिंग पपेट्स–तार या धागे द्वारा उपर से दिखाना।
- ग्लोब पपेट्स–पहन कर हाथ घुमा फिराकर उनमें भाव पैदा किया जाता है।
- शैड पपेट्स–प्रकाश का प्रबन्ध पीछे से किया जाता है, पर्दे पर छाया दर्शाता जाती है।

11. नाटक–

प्रयोग / लाभ–

- अपने विचार जन समूह तक पहुंचाना।

रूप–

- एकाकी नाटक
- गीत नाटक
- प्रहसन
- मूक नाटक
- राम लीला
- रास लीला
- नौटंकी
- स्वांग।

दृश्य श्रृव्य साधनों से लाभ

- विषय सरल हो जाता है।
- अधिक लोगों को एक साथ शिक्षा प्रदान की जाती है।
- कार्यक्रम में आकर्षण।
- कम व्यय में अधिक से अधिक लोग लाभान्वित।
- व्यर्थ शब्द जाल से शिक्षार्थियों को मुक्ति।
- सीख को स्थायित्व।
- सीख की प्रक्रिया में अधिक कुशलता, गहराई।
- सांबोधिक सोचने (Conceptual Thinking) की प्रक्रिया को एक ठोस आधार।

प्रयोग क्यों करें ?

- सूंघना 3%
- स्वाद 3%
- छूना 6%
- सुनना 13%
- देखना 75%

दृश्य श्रृव्य साधनों के चुनाव तथा निर्माण हेतु कतिपय निर्देशन

- शिक्षार्थियों का विवेचन।
- आसानी से देखने योग्य।
- समझने में आसान।
- सादा एवं सीधा/स्वच्छ एवं आकर्षक।
- चालन एवं वहन में आसानी।
- मूल बातों पर बल देना।
- समय व स्थान का चुनाव, अर्थपूर्ण ज्ञान में सहायक।
- सावधानीपूर्वक योजना बनाना।
- रूचि बनाये रखने में सक्षम।
- प्रोजेक्टेट उपकरण के प्रयोग में अन्य प्रकाश को हटाना।

दृश्य साधनों में रंगो का प्रयोग–

पीले पर काला

सफेद पर हरा

सफेद पर लाल

सफेद पर नीला

सफेद पर काला

काले पर पीला

हरे पर सफेद

काले पर सफेद

पीले पर लाल

हरे पर लाल

लिखने के प्रकार–

- **Capital words**
- **Uniform words**
- **Similar Gaps**
- **Bold letter**
- **Uniform Stant**

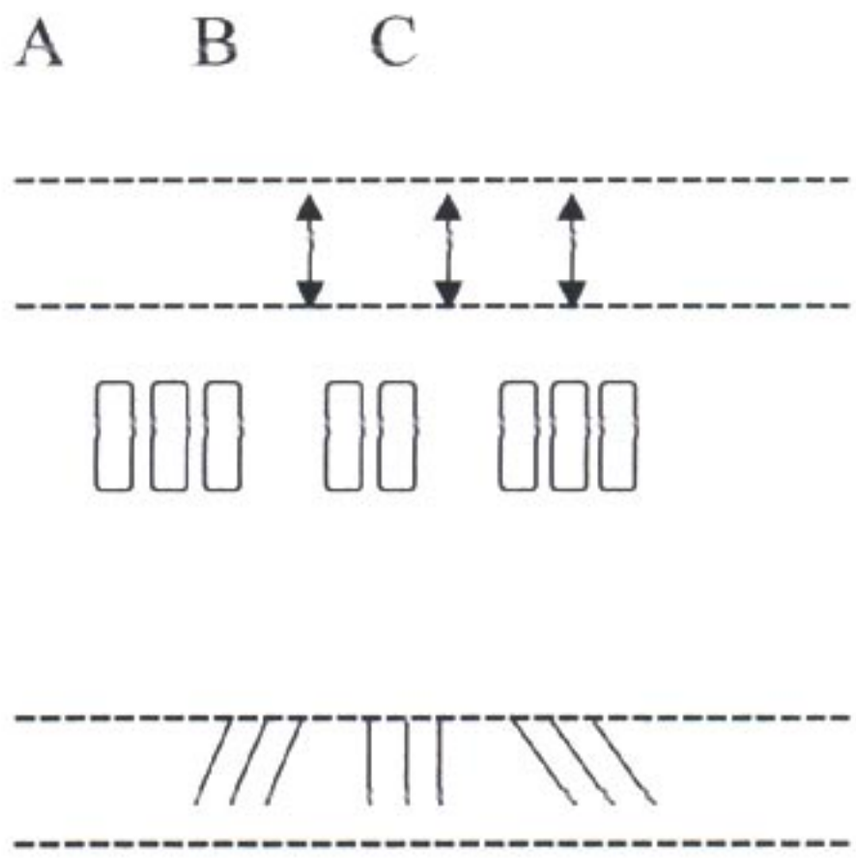

फोटोशॉप

फोटोशॉप एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर एडोब कम्पनी द्वारा बनाया गया है। इसके बहुत से वर्जन उपलब्ध हैं जैसे 6.0, 7.0, 8.0, CS2। जैसे–जैसे वर्जन में बढ़ोत्तरी हो रही है वैसे–वैसे कार्य करने में सरलता हो रही है। लेकिन साथ–साथ सिस्टम रिक्वायरमेन्ट भी बढ़ती जा रही है। यदि हमारा सिस्टम उच्च श्रेणी का नहीं है तो यह एडवांस वर्जन सपोर्ट नहीं करेगा।

एडोब फोटोशॉप एक ऐसा सॉफ्टवेयर है जिसके द्वारा पिक्चर में किसी प्रकार की एडिटिंग की जा सकती है। एडिटिंग से तात्पर्य यह है कि इसके द्वारा फोटो ब्लैक एण्ड व्हाइट करना, रंगीन से ब्लैक एण्ड व्हाइट करना, साइज घटाना–बढाना, खराब फोटो को सही करना, गुणवत्ता बढ़ाना कम करना, फारमेट बदलना जैसे – जे0पी0जी0, बी0एम0पी0, पी0एन0जी0 इत्यादि, आदि। जब कोई फाइल को एडिट किया जाता है तो वह बाई डिफाल्ट पी0एस0डी0 फाइल फोटोशॉप की फाइल में सेव होता है। आप अपनी आवश्यकतानुसार फाइल को एडिट करके जे0पी0जी0, पी0डी0एफ0, या अन्य फारमेट में सेव कर सकते हैं।

इसका प्रयोग करना कठिन नहीं है। अभ्यास करते–करते आप फोटोशॉप को असानी से सीखा जा सकता है। इसमें कार्य करने के लिए विभिन्न प्रकार के टूल्स दिये होते हैं जिनका प्रयोग से फोटो को एडिट करना, डिजाइन बनाना आदि कार्य आसानी से किया जा सकता है। इन टूल्स का विवरण निम्न प्रकार हैः–

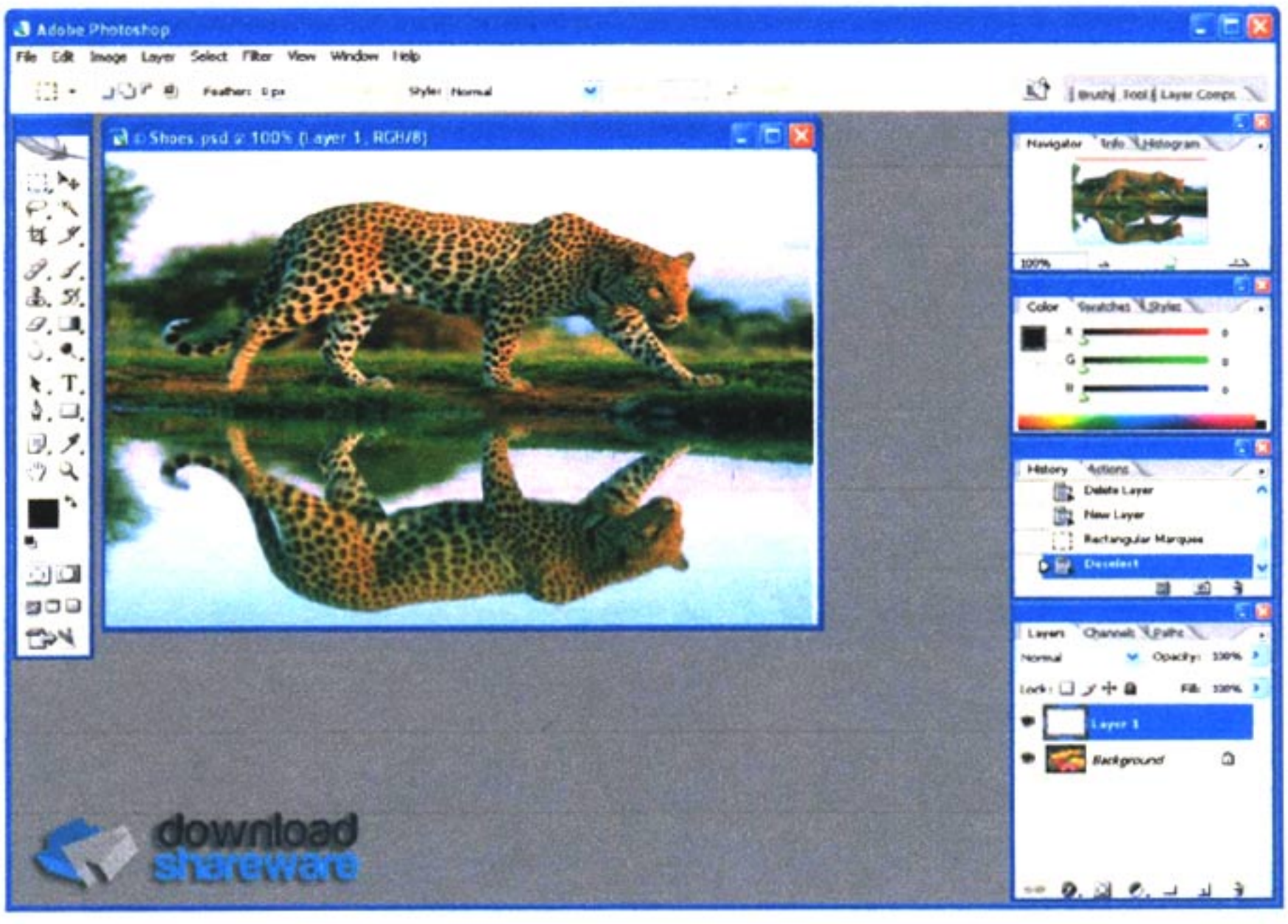

- सलैक्शन टूल – इस टूल के प्रयोग से किसी भी इमेज को वर्गाकार या आयताकार रूप में सेलेक्ट किया जाता है। इसके बाद प्वाइंटर द्वारा सैलेक्टेट वर्ग को कहीं घुमा सकते हैं। इस सैलेक्ट की गयी इमेज पर कापी या कट कर दूसरी नयी इमेज बना सकते हैं। यदि कार्य करने में कोई गलती हो गयी है तो एक स्टेप पीछे जाने के लिए कन्ट्रोल Z का प्रयोग करेंगे। Ctrl Alt+Z का प्रयोग करके बाई डिफाल्ट 30 स्टेप पीछे तक भी जाया जा सकता है। इस और भी बढ़ाया जा सकता है इसे जितना बढ़ाते जायेंगे कम्प्यूटर की मेमोरी व्यर्थ होगी। मेमोरी से तात्पर्य रैम से है।
- मूव टूल– मूव टूल का प्रयोग सैलेक्टेड एरिया को पूरी स्क्रीन पर घुमाने के काम में आता है। Ctrl Alt के साथ सैलेक्ट एरिया की कापी बनती चली जायेंगी। अपनी अवश्यकतानुसार कापी कर सकते हैं।
- ब्रीजर टूल– यदि हमको आयत या वर्ग के अतिरिक्त इच्छित रूप में करना है तो उसके लिए हम इस टूल का प्रयोग करते हैं। इस एक टूल के अन्दर तीन टूल–लैसो टूल, पॉलीकॉन टूल तथा मैगनेटिक टूल छिपे रहते हैं। राइट क्लिक करने पर यह टूल प्रदर्शित होते हैं।